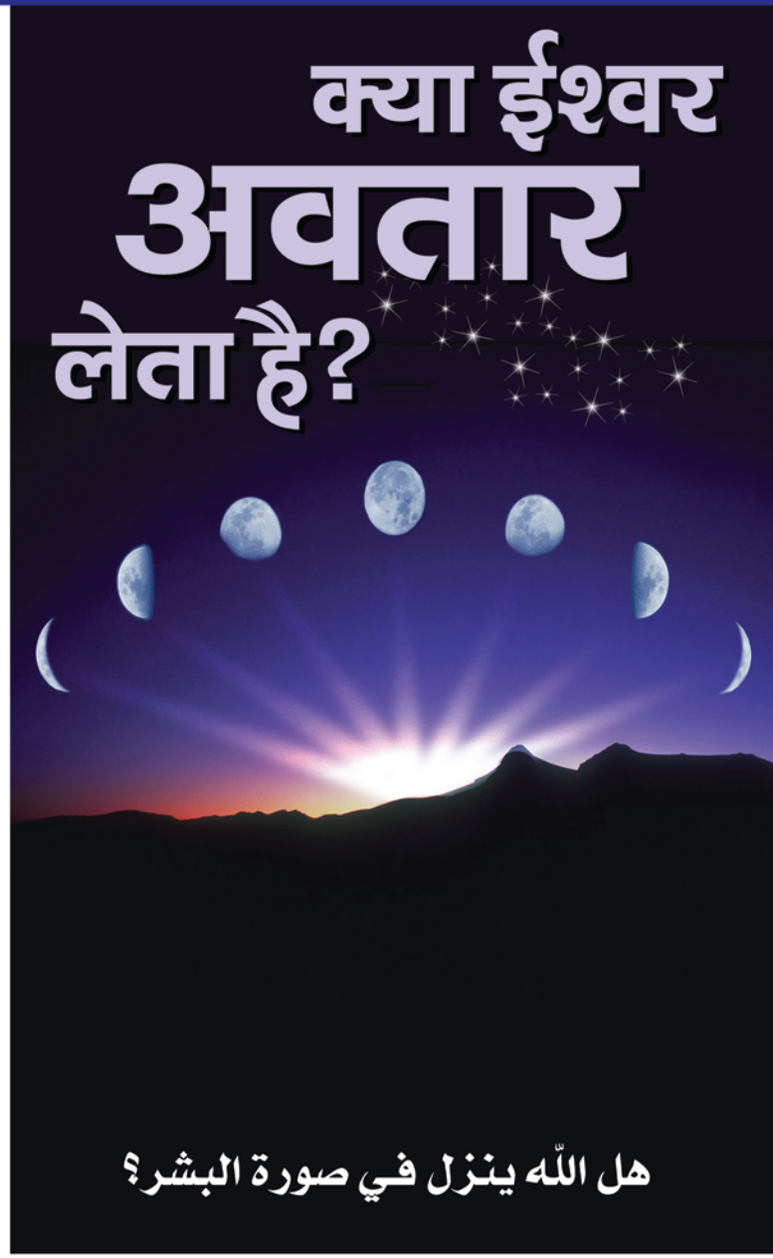

श्रद्धा भरी नज़र डाला तो किसी समूह ने उन्हें भगवान बना लिया, किसी ने अवतार का सिद्धांत गढ़ लिया जबकि किसी ने समझ लिया कि वह ईश्वर के पुत्र हैं हालांकि उन्हों ने उसी के खंडन और विरोध में अपना पूरा जीवन बिताया था।

इस प्रकार हर युग में संदेष्टा आते रहे और लौग अपने स्वार्थ के लिए उनकी शिक्षाओं में परिवर्तन करते रहे यहाँ तक कि जब सातवीं शताब्दी ईसवी में सामाजिक, भौतिक और सांस्कृतिक उन्नति ने सारी दुनिया को इकाई बना दिया तो ईश्वर ने हर हर देश में अलग अलग संदेष्टा भेजने का क्रम बन्द करते हुए अरब में महामान्य हज़रत मुहम्मद सल्ल० को भेजा और उन पर ईश्वरीय संविधान के रूप में क़ुरआन का अवतरण किया, यह ग्रन्थ चौदह सौ शताब्दी पूर्व अवतरित हुआ था लेकिन आज तक पूर्ण रूप में सुरक्षित है एक ईसाई विद्वान मिस्टर विल्यम मयूर कहते हैं -

> **''संसार में क़ुरआन के अतिरिक्त कोई एसा ग्रन्थ नहीं पाया जाता जिसका अक्षर एवं शैली बारह शताब्दी गुज़रने के बावजूद पूर्ण रूप में सुरक्षित हो''।**

इस्लाम कब से ?

आज अधिकांश लोगों में यह भ्रम प्रचलित है कि इस्लाम के संस्थापक मुहम्मद सल्ल० हैं। हालांकि सत्य यह है कि मुहम्मद सल्ल० कोई नया धर्म लेकर नहीं आए बल्कि उसी धर्म के अन्तिम संदेष्टा थे जो धर्म ईश्वर ने मानव के लिए चुना था, मुहम्मद सल्ल० इस्लाम के संस्थापक नहीं बल्कि उसके अन्तिम संदेष्टा हैं, यही वह धर्म है जिसकी शिक्षा आदि मनुष्य को दी गई थी। सब से पहले मानव आदम हैं जिनकी रचना ईश्वर ने बिना माता-पिता के की थी और उनके बाद उनकी पत्नी हव्वा को उत्पन्न किया था, इन्हीं दोनों पति-पत्नी से मनुष्य की उत्पत्ति का आरम्भ हुआ जिनको कुछ लोग मनु और सतरोपा कहते हैं, तो कुछ लोग ऐडम और ईवा। जिनका विस्तार पूर्वक उल्लेख पवित्र क़ुरआन (2/30-38) तथा भविष्य पुराण प्रतिसर्ग पर्व (खण्ड1अध्याय4) और बाइबिल (उत्पत्ति २/६-२५) और दूसरे अनेक ग्रन्थों में किया गया है, ईश्वर ने हर युग में प्रत्येक समूह को उनकी अपनी भाषा ही में शिक्षा प्रदान किया, उसी शिक्षा के अनुसार जीवन-यापन का नाम इस्लाम था जिसका नाम प्रत्येक संदेष्टा अपनी अपनी भाषा में रखते थे जैसे संस्कृत में नाम था 'सर्व समर्पण धर्म' जिसका अरबी भाषा में अर्थ होता है ''इस्लाम धर्म''।

ज्ञात यह हुआ कि मानव का धर्म आरम्भ से एक ही रहा है परन्तु लोगों ने अपने अपने गुरुओं के नाम से अलग अलग धर्म बना लिया और विभिन्न धर्मों में विभाजित हो गए।

आज हमारी सब से बड़ी आवश्यकता यही है कि हम अपने वास्तविक ईश्वर की ओर पलटें जिसका सम्बन्ध किसी विशेष देश, जाति, या वंश से नहीं बल्कि वह सम्पूर्ण संसार का सृष्टा,अन्यदाता और पालनकर्ता है।

प्रिय मित्र! ईश्वर ही ने हम सब को पैदा किया, वही हमारा पालन-पोषण कर रहा है तो स्वाभाविक तौर पर हमें केवल उसी की पूजा करनी चाहिए, इसी तथ्य का समर्थन प्रत्येक धार्मिक ग्रन्थों ने भी किया है। देखिए ऋग्वेद ४।१२।१ **दुवैरा सत्सि बर्हिषि**। सैकड़ों देवताओं का बहिष्कार करो।

इस्लाम भी यही आदेश देता है कि मात्र एक ईश्वर की पूजा की जाए, इस्लाम की दृष्टि में स्वयं मुहम्मद सल्ल० की पूजा करना अथवा आध्यात्मिक चिंतन के बहाने किसी चित्र का सहारा लेना महापाप है। सुनो अपने ईश्वर की -

> **''लोगो! एक मिसाल दी जाती है,ध्यान से सुनो! जिन पूज्यों को तुम अल्लाह को छोड़ कर पुकारते हो वे सब मिल कर एक मक्खी भी पैदा करना चाहें तो नहीं कर सकते। बल्कि यदि मक्खी उन से कोई चीज़ छीन ले जाए तो वे उसे छुड़ा भी नहीं सकते। मदद चाहने वाले भी कमज़ोर और जिन से मदद चाही जाती है वह भी कमज़ोर,इन लोगों ने अल्लाह की क़द्र ही नहीं पहचानी जैसा कि उसके पहचानने का हक़ है''।** (२२/ ७३)

प्रिय मित्र! इस धार्मिक पत्र में हमने आपको संक्षिप्त में ईश्वर का ज्ञान देने की कोशिश की है अधिक जानकारी हेतु हम से सम्पर्क करें।

आपका शुभचिंतक

एस० आलम तैमी

للمساهمة معنا في مشروع طباعة الكتب
www.ipc-kw.com 104 : داخلي 2444117 - 2427383
Fahad Salem St. Al-Mulla Saleh Mosque P.O.Box:1613 Safat 13017
Tel.: 2444117 - Fax: 2400057 e-mail:ipb@ipc-kw.com

IPC
لجنة التعريف بالإسلام
ISLAM PRESENTATION COMMITTEE
جمعية النجاة الخيرية

ईश्वर के नाम से जो बड़ा कृपाशील और दयावान है

प्रिय मित्र! नमस्कार ------ आशा है कि आप सकुशल होंगे।

यह एक धार्मिक पत्र है जिसका उद्देश्य ईश्वर के सम्बन्ध में आपके समक्ष कुछ महत्वपूर्ण बातें प्रस्तुत करना है, आज हम सब ईश्वर का नाम अवश्य लेते हैं, उसकी पूजा भी करते हैं परन्तु बड़े खेद की बात है कि उसे पहचानते बहुत कम लोग हैं, जी हाँ! ईश्वर की अज्ञानता के फलस्वरूप ही हम ईश्वर के नाम पर परस्पर झगड़ रहे हैं, वास्तव में यदि हम ईश्वर का सही ज्ञान प्राप्त कर लें तो हम सब एक हो जाएं। तो आइए! हम धार्मिक ग्रन्थों द्वारा अपने ईश्वर का सही ज्ञान प्राप्त करते हैं।

ईश्वर कौन ?

ईश्वर अकेला सृष्टा, पालनहार, और शासक है उसी ने पृथ्वी, आकाश, चंद्रमा, सूर्य, सितारे, मनुष्यों और प्रत्येक जीव जन्तुओं को पैदा किया, न उसे खाने, पीने और सोने की आवश्यकता पड़ती है, न उसके पास वंश है और न उसका कोई भागीदार है। उसी ईश्वर को हम परमात्मा, यहोवा, गाड और अल्लाह भी कहते हैं।

पवित्र ग्रन्थ क़ुरआन ईश्वर का इस प्रकार परिचय कराता है-

''कहो वह अल्लाह है, यकता है, अल्लाह सब से निरपेक्ष है और सब उसके मुहताज हैं, न उसकी कोई संतान है और न वह किसी की संतान और कोई उसका समक्षक नहीं है''। (सूर न० : 112)

इस सूरः में ईश्वर के पाँच मूल गुण बताए गए हैं

(१) ईश्वर केवल एक है। (२) उसको किसी की आवश्यकता नहीं पड़ती। (३) उसका कोई संतान नहीं। (४) उसके पास माता पिता नहीं। (५) उसका कोई भागीदार नहीं।

और हिन्दु वेदान्त का ब्रहमसुत्र यह है-

एकम ब्रहम द्वितीय नास्तेः नहे ना नास्ते किंचन।

ईश्वर एक ही है दूसरा नहीं है, नहीं है, तनिक भी नहीं है।

तथा अर्थवेद ९/४० में है **''जो लोग झूठे अस्तित्व वाले देवी देवताओं की पूजा करते हैं वे (अंधा कर देने वाले) गहरे अंधकार में डूब जाते हैं वह एक ही अच्छी पूजा करने योग्य है''।**

क्या ईश्वर अवतार लेता है?

बड़े दुख की बात है कि जिस ईश्वर की कल्पना हमारे हृदय में स्थित है अवतार की आस्था ने उसकी महिमा का विभाजन कर दिया। आप स्वयं सोचें कि जब ईश्वर का कोई भागीदार नहीं और न उसे किसी चीज़ की ज़रूरत पड़ती है तो आख़िर उसे मानव रूप धारण करने की क्या ज़रूरत पड़ी? यही कारण है कि श्रीमद्भागवतगीता (7/24) ने ऐसी आस्था रखने वालों को बुद्धिहीन की संज्ञा दी है-

अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः
परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम ।। २४।।

''मैं अविनाशी, सर्वश्रेष्ठ और सर्वशक्तिमान हूं, अपनी शक्ति से सम्पूर्ण संसार को चला रहा हूं,बुद्धिहीन लोग मुझे न जानने के कारण मनुष्य की तरह शरीर धारण करने वाला मानते हैं''।

तथा ऋवेद के टीकाकार आशोराम आर्य ऋवेद के मंडल 1, सुक्त 7, मंत्र 10 पर टीका करते हुए कहते हैं :-

''जो मनुष्य अनेक ईश्वर अथवा उसके अवतार मानता है वह सब से बड़ा मूर्ख है''।

और यजुर्वेद 32 / 3 में इस प्रकार है -

न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महदयश।

'जिस प्रभु का बड़ा प्रसिद्ध यश है उसकी कोई प्रतिमा नहीं है'

प्रिय मित्र! ज़रा धार्मिक पक्षपात से अलग हो कर आप स्वयं सोचें कि क्या ऐसे महान ईश्वर के सम्बन्ध में यह कल्पना की जा सकती है कि वह जब इन्सानों के मार्गदर्शन का संकल्प करे तो स्वयं ही अपने बनाए हुए किसी इन्सान का वीर्य बन जाए, अपनी ही बनाई हुई किसी महिला के गर्भाशय की अंधेरी कोठरी में प्रवेश हो कर 9 महीना तक वहां क़ैद रहे और उत्पत्ति के विभिन्न चरणों से गुज़रता रहे, ख़ून और गोश्त में मिल कर पलता बढ़ता रहे फिर एक तंग स्थान से निकले, बाल्यावस्था से किशोरावस्था को पहुंचे, सच बताइए क्या इस से उसके ईश्वरत्व में बट्टा न लगेगा?

यदि आप से कोई व्यक्ति कहे कि लन्दन में हवा हवाई जहाज़ बन गई है तो ऐसा कहने वाले को आप तुरन्त मूर्ख और पागल कहने लगेंगे क्योंकि हवा हवाई जहाज़ कदापि नहीं बन सकती, उसी प्रकार ईश्वर मनुष्य कभी नहीं बन सकता, क्योंकि ईश्वर एवं मनुष्य के गुण भिन्न भिन्न हैं। यधपि ईश्वर को हम सर्वशक्तिमान मान कर चलते हैं परन्तु इस का अर्थ यह तो नहीं कि ईश्वर ईश्वरत्व से बदल कर मनुष्यत्व में परिणत हो जाए।

प्रिय मित्र! अब आप पूछ सकते हैं कि जब ईश्वर अवतार नहीं लेता तो उसने मानव का मार्गदर्शन कैसे किया ?

इसका उत्तर प्राप्त करने के लिए यदि आप अवतार का सही अर्थ समझ लें तो आपको स्वयं पता चल जाएगा कि ईश्वर ने मानव का मार्गदर्शन कैसे किया, तो लीजिए! अवतार का अर्थ जानिए-

श्री राम शर्मा जी कल्किपुराण के 278 पृष्ठ पर अवतार की परिभाषा करते हैं :-

''समाज की गिरी हुई दशा में उन्नति की ओर ले जाने वाला महामानव नेता ।''

अर्थात मानव में से महान नेता जिनको ईश्वर मानव मार्गदर्शन हेतु चुनता है।

डा० एम० ए० श्रीवास्तव लिखते हैं -

''अवतार का अर्थ यह कदापि नहीं है कि ईश्वर स्वयं धरती पर सशरीर आता है,बल्कि सच्चाई यह है कि वह अपने पैग़म्बर और अवतार भेजता है''।

(हज़रत मुहम्मद सल्ल० और भारतीय धर्मग्रन्थ पृष्ठ 5)

ज्ञात यह हुआ कि ईश्वर की ओर से ईश-ज्ञान लाने वाला मनुष्य ही होता है जिसे संस्कृत में अवतार,अंग्रेज़ी में प्राफेट और अरबी में रसूल (ईश-दूत) कहते हैं।

जी हाँ! ईश्वर ने मानव मार्गदशन हेतु हर देश और हर युग में अनुमानतः1,24000 ज्ञानियों को भेजा। पुराने ज़माने में उन ज्ञानियों को श्रृषि कहा जाता था। क़ुरआन उन्हें धर्म प्रचारक, रसूल, नबी या पैग़म्बर कहता है। वह सामान्य मनुष्य के समान होते थे, उनमें ईश्वरीय गुण कदापि नहीं होता था, उनके पास ईश्वर का संदेश आकाशीय दूतों के माध्यम से आता था तथा उनको प्रमाण के रूप में चमत्कारियाँ भी दी जाती थीं।

लेकिन जब इन्सानों ने उनमें असाधारण गुण देखकर उन पर